

7,142. MBh. 3,528. 15708. R. GORR. 2,30,5. ता कन्या वासुकिः पर्यरत्नत
MBh. 1,1642. 1940. 2948. 3,14366. 7,3661. HARIV. 9085. 9690. परि-
रत्नमाणा BHĀG. P. 5,9,21. परिरत्नित 24,28. 9,9,40. MBh. 5,6035. यो-
षितः परिरत्नितुम् *hüten* M. 9,10. अयानं ते पर्यरत्न्यः परिरत्नतु सुCR. 1,17,
2. तदिदं परिरत्न वपुः KUMĀRAS. 4,44. अत्मानं परिरत्नस्व MBh. 1,6195.
शक्यस्तेनानुमानेन परो ऽपि परिरत्नितुम् *erhalten* —, *gerettet werden* Spr.
2129. परिरत्न अस्मदीयप्राणान् PAÑĀT. ed. orn. 58,12. अत्मानं परि-
रत्नस्व पुरीं चेमां सरत्नसाम् R. 5,88,24. 23,17. सीता च परिरत्निता *geret-
tet* 56,144. MĀKĪ. 110,17. अयोध्यां परिरत्नति *so v. a. beherrscht* R.
GORR. 2,109,49. HARIV. 733. 3714. Spr. 5063. BHĀG. P. 5,4,17. मद्भु-
परिरत्निते ऽस्मिन्वने PAÑĀT. 30,24. 215,7. नक्षेत्रे राघवस्यार्थे जीवितं
परिरत्नति *schont* R. 6,4,27. न स्म पश्यामहे कंचिच्चः प्राणान्परिरत्नति
MBh. 6,4062. *schonen, vor Berührung behüten* सुCR. 1,98,16. शिष्टं मो-
सम् — काकेभ्यः पर्यरत्नत *aufbewahren* R. 2,96,38 (105,37 GORR.). एष
चूडामणिर्दिव्यो मया सुपरिरत्नितः 5,37,7. ये विप्राः — ब्राह्मीं वाचं परि-
रत्नति MBh. 13,4886. स्वधर्मं परिरत्नता *treu bewahrend* R. 4,24,10. 5,51,
13. प्रतिज्ञाम् R. GORR. 2,50,8. लोकप्राणमिमां कृत्स्नां परिरत्नत आसते
so v. a. bedacht auf HARIV. 6811. *vermeiden* सुCR. 2,13,12. *med. mit gen.
Jmd vermeiden, machen, dass man nicht mit Jmd zusammenkommt* R.
5,73,20. — Vgl. परिरत्नक fgg.

— संपरि *beschützen*: लोकान्संपरिरत्नितुम् R. 7,104,3.

— प्र *bewahren, schützen vor (abl.), erretten von*: कर्कटेन द्वितीयेन
सर्पात्पान्थः प्ररत्नितः Spr. 147. BÜHLER'S Ausg. des PAÑĀT. liest जीवितं
परिरत्नितम् *st. सर्पात्पान्थः प्र* — Vgl. प्ररत्न fgg.

— प्रति 1) *behüten, beschützen*: यदि प्रूरस्तथा ज्ञेमे (ज्ञेमे *ed. Bomb.*)
प्रतिरत्नेयथा भये MBh. 12,3596. विश्वा आशाः प्रति रत्नत्येकं AV. 10,8,
36. सत्यां (so die *ed. Bomb.*) प्रतिज्ञां तां पार्थिवं प्रतिरत्नता *treu haltend*
MBh. 8,3542. — 2) *fürchten, sich retten vor*: प्रतिरत्नन्नसुर्यम् VS. 8,24.

— वि *behüten, beschützen, bewahren*: सर्वं भूतम् AV. 10,6,18. 13,2,41.
राज्ञां राष्ट्रं वि रत्नति 11,5,17. अन्योऽन्यं समुपाश्रित्य विरत्नति रणाजिरे
(न त्यद्यति रणाजिरे *ed. Bomb.*) MBh. 7,4410. द्रोणां च के व्यरत्नत 7329.

— सम् *bewachen, bewahren, beschützen, hüten, behüten, erhalten, er-
retten, servare*: संरत्नतो मुनिगणान्निघ्नतो रत्नसान्मम् R. 3,10,25. 7,108,
27. Spr. 1828. Verz. d. Oxf. H. 257, a, N. 3. संरत्न्यमाणो राज्ञा M. 7,136.
MBh. 7,230. 6059. R. 5,19,33. KATHĀS. 20,87. RĀGA-TAR. 3,39. संरत्नित
HARIV. 9072. MĀKĪ. 103,13. 110,15. RAGH. 4,35. 13,65. KATHĀS. 9,80.
संरत्नेत्सर्वतश्चैनं पिता पुत्रमिवैरसम् M. 7,135. पित्रा संरत्नितं शक्रात्
BHĀTT. 8,8. केदारान् — मृगवराहदिभ्यः संरत्नमाणमङ्गिरःप्रवरसुनम्
BHĀG. P. 5,9,14. प्राणैः संरत्नितैः सर्वं यतो भवति रत्नितम् Spr. 3163.
कटकं संरत्न्य RĀGA-TAR. 5,218. अनिद्र एव षड्रात्रं स संरत्नन्मुनेः क्रतुम्
R. GORR. 1,33,6. मधुवनं संरत्न त्वम् 5,63,27. धर्मं संरत्नते दण्डस्तथैवार्थं
ज्ञानाधिप । कामं संरत्नते दण्डः MBh. 12,426. वृत्तं पत्नेन संरत्नते Spr. 5030.
संरत्नेन्मन्त्रबीजम् KĀM. NĪTIS. 11,53. मन्त्रं संरत्नते 64. दंपत्योः संरत्नतेगौ-
रवम् *bewahren* Spr. 330. अत्मानश्च परेषां च वृत्तिं संरत्न *sichre* MBh. 13,
3080. *aufbewahren, verwahren*: तद्दानवशरीरं ते संरत्न्य स्थापितं मया
KATHĀS. 43,50. — Vgl. संरत्नण fgg.

2. रत्न (= 1. रत्न) *adj.*, am Ende eines comp. *bewachend, hütend* u. s. w.
Vop. 3,136. — Vgl. गो°.

VI. Theil.

3. रत्न (eigentlich रत्न = रिष्, रिष् *beschädigen, verletzen*: मा नो
रत्नीर्दक्षिणां नीयमानाम् AV. 5,7,1. — Davon रत्नम्.

रत्न (von 1. रत्न) 1) *nom. ag. (f. ई) Wächter, Hüter*: नृपस्य रत्नान्परि-
हरामि (रत्नां v. l.) MĀKĪ. 53,23. 58,18 (s. d. Anm.). am Ende eines comp.
bewachend, beschützend, hütend, erhaltend: नृप° (भृत्य) Spr. 783, v. l. प्र-
तिहाररत्नी Thorwächterin RAGH. 6,20. नदीरत्न R. 2,84,7. गजपाद° MBh.
4,2092. जगद्गत HARIV. 15686. तेषां धर्मकर्त्ताणाम् *bewahrend, beobachtend*
R. 2,73,19. Vgl. क्षेत्र°, गो°, चक्र°, तुरग°, पाद°, पुर°, पृष्ठ°, लोक°, सेना°,
सोम° — 2) रत्ना a) *Schutz, Erhaltung, Bewahrung* H. an. 2,569. MED. sh. 23.
Nir. 5,23. स्याद्वाज्ञो (नामधेयं) रत्नासमन्वितम् M. 2,32. 4,153. MBu. 3,12772.
ÇĀK. 47. नियुक्तो रत्नाविधौ KATHĀS. 34,72. BHĀG. P. 2,3,8. 10,82,6.
कृतरत्न *dem Schutz gewährt ist* सुCR. 1,17,21. यदश्वरत्नम् RAGH. 2,40.
das obj. im gen. MBh. 3,2624. रत्नां करोतु सततं वृद्धबालस्य सर्वशः 3,
5429. R. 3,14,21. RAGH. 2,8. MEGH. 44. BHĀG. P. 1,8,13. MĀKĪ. P. 96,
43. PAÑĀT. 1,3,15. fg. PAÑĀT. 51,14. 157,7. रत्नार्थमस्य सर्वस्य राजान-
मसृजत्प्रभुः M. 7,3. जगतः BHĀG. P. 4,8,7. मयि सृष्टिर्हि लोकानां रत्ना
युष्मास्ववस्थिता KUMĀRAS. 2,28. सृष्टिरत्नाविनाशिनैः (so ist zu lesen) HA-
RIV. 14932. BHĀG. P. 12,7,9. 14. गोविप्रमूरसाधूनां इन्द्रसाम् — धर्मस्वार्थस्य
चैव 8,24,5. वनस्य R. 5,60,20. यज्ञस्य 1,20,4. अन्नस्य सुCR. 1,10,10. das obj.
im comp. vorangehend (Accent eines solchen comp. गापा घोषादि zu P.
6,2,85): भृत्य° BHĀG. P. 9,4,48. KATHĀS. 10,164. 23. 2. RĀGA-TAR. 2,108.
BHĀG. P. 3,13,12. प्रज्ञासर्ग° 4,30,51. लोक° MBh. 1,1153. तपोवनसत्त्व° ÇĀK.
17,20. आवास° PAÑĀT. 184,8. गृह° HIT. 30,6. शरीर° RAGH. 2,4. देह°
LA. (III) 91,6. नित्ति° ÇĀK. 179. समयसेतु° BHĀG. P. 5,4,5. सन्तु° HIT. 115,
1, v. l. पक्वशालिवनस्फीति° RĀGA-TAR. 3,22. जीवित° MBh. 12,4274. औ-
चित्यान्वय° KATHĀS. 1,11. शीत° *Schutz vor der Kälte* PAÑĀT. 93,7. हरि-
र्विद्व्यान्मम सर्वरत्नाम् BHĀG. P. 6,8,10. पद्य° (am Ende eines adj. comp.,
f. आ) *Schutz auf der Reise* KATHĀS. 43,258. Vgl. नगर° — b) *Wache*
(concret): नृपस्य रत्नां परिहरामि MĀKĪ. 53,23, v. l. विधाय रत्नाम् KĀM.
NĪTIS. 13,44. Vgl. अङ्ग°. — c) *was zum Schutze dient, eine zum Schutz*
einer Person vorgenommene Handlung; Amulet, mystische Zeichen:
कृत्वा रत्नां निरामयाम् R. 1,62,18. कृत्वा मनोमयीं रत्नाम् AMĀTAN. Up. in
Ind. St. 9,30. यषोदरेरिच्छिण्णैर्भ्यां ताः समं बालस्य सर्वतः । रत्नां विदधिरे
सम्यगोपुच्छश्चमणादिभिः ॥ गोमूत्रेण स्नापयित्वा पुनर्गौरजसार्भकम् । रत्नां
चक्रुश्च शकृता द्वादशङ्गेषु नामभिः ॥ BHĀG. P. 10,6,19. fg. सुCR. 1,16,12.
13. 71,13. विधान 2,16,11. सर्वरत्नासमन्वित WEBER, KRISHNĀG. 269. 283.
श्रापयो चापि सिद्धार्थी विशल्यकरणौ तथा । चकार रत्नां कौसल्या मल्लै-
भिर्ज्ञाप च ॥ R. 2,25,36. बन्ध Verz. d. B. H. 136, a, 132. (Verz. d. Oxf.
H. 33, a, 13). VP. 506. रत्नाश्च चैव गृहे लेख्याः MĀKĪ. P. 51,37. — d)
Schutzgottheit; vgl. पञ्च°, महा°. — e) *Asche (als Schutzmittel)* H. 828.
H. an. HALĀJ. 1,69. ÇĀBDAR. im ÇKDR. Verz. d. Oxf. H. 184, a, 31.

रत्नश्श (1. रत्नस् + श्श) *m. Bein.* Rāvaṇa's H. 706.

रत्नक (von 1. रत्न) 1) *nom. ag. Wächter, Hüter* KATHĀS. 43,32. fg. 46,144.
208. 63,146. अघुनाहं ते सर्वच्छिक्रेषु रत्नकः 66,126. PAÑĀT. 1,7,58.
PAÑĀT. 8,25. HIT. 42,5. बालानाम् PAÑĀT. 4,8,62. HIT. 128,9. गवादि-
रत्नकाः KATHĀS. 30,95. लोक° HARIV. 14940. कीचकवन° KATHĀS. 46,
106. शस्प° HIT. 81,15. रत्निका *Wächterin, Hüterin* KATHĀS. 74,167.
अन्नःपुर° 103,14. अमृतस्य यत् । रत्नकं चक्रयत्नम् 29,17. Vgl. अङ्ग°,
14*